सत्य साहित्य

वर्ष 53 / अंक 2
अक्तूबर-दिसम्बर
2014

मूल्य ₹ 5

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

५२

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणं,
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, करकंज, पद कंजारुणं

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद सुंदरं,
पट पीत मानहु तडित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरं

भजु दीन बंधु, दिनेश, दानव दैत्य वंश निकंदनं,
रघुनन्द आनन्द कंद कोशलचंद्र दशरथ नन्दनं

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदार अंग विभूषणं,
आजानु भुज शर-चापधर, संग्रामजित खर दूषणं

इति वदति तुलसीदास शंकर, शेष मुनि मनरंजनं,
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनं।

:

" तेरा मेरा नाता है राम विधाता
तू ही पिता और माता - हे राम विधाता"

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के अवतरण दिवस की बधाई
- विजयदशमी (‘सत्य साहित्य’ अक्तूबर 1961 में प्रकाशित परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का लेख)
- परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से
- परम पूजनीय महाराज जी के तिलक दिवस की बधाई
- राम नाम का प्रताप (परम पूजनीय महाराज जी)
- परम पूजनीय स्वामी जी महाराज द्वारा परम पूजनीय प्रेम जी महाराज को लिखा पत्र
- परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- प्रश्न उत्तर
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- बच्चों के लिए
- कैलेंडर

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज अवतरण दिवस पर लख लख बधाई

मनुष्यों का उद्धार करने के लिए युगों से, पुण्यात्माएँ ईश्वर के स्वरुप में हमेशा जन्म लेती आई हैं।

परम पूज्य परम आस्था और विनम्र शान्ति के स्वरुप पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का भी आगमन 2 अक्तूबर को ईश्वरीय इंगित था। राम नाम के अनुभूत संत रहे हैं परम पूजनीय प्रेम जी महाराज।

परम पूजनीय महाराज ने परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के पद्चिन्हों पर चल कर निराकार ज्योति स्वरुप राम को अनुभव किया और उनके अलौकिक प्रसाद को बहुतों में बाँटा और वही सिलसिला आज भी चल रहा है। इस पावन जन्म दिवस में परम पूजनीय प्रेम जी महाराज को अनन्त अन्तर्मनन से अनुभव कीजिए।

अनन्त शान्ति, अक्षय शिष्टाचार के प्रतिरुप और अनुशासन के दिव्य स्वरुप हैं परम पूजनीय प्रेम जी महाराज। अपने को संत कैसे मिटा देते हैं भक्तों के लिए ये परम पूजनीय प्रेम जी महाराज से सीखिए।

उस समय के साधकों से कहते सुना है, लोग परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के दर्शन करने आते थे उन्हें सुनने नहीं। दिव्य मौन, स्वल्प भाषी, बालक जैसा ह्रदय, माँ जैसा प्यार, दोस्त जैसा अहसास और गुरु जैसा भाव उनकी प्रतिभा और स्वरुप में झलकता था।

आज भी हज़ारों साधक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के सूक्ष्म रुप में दर्शन करते हैं और वे हमेशा संकट मोचन का राम काज करते हैं। उनकी

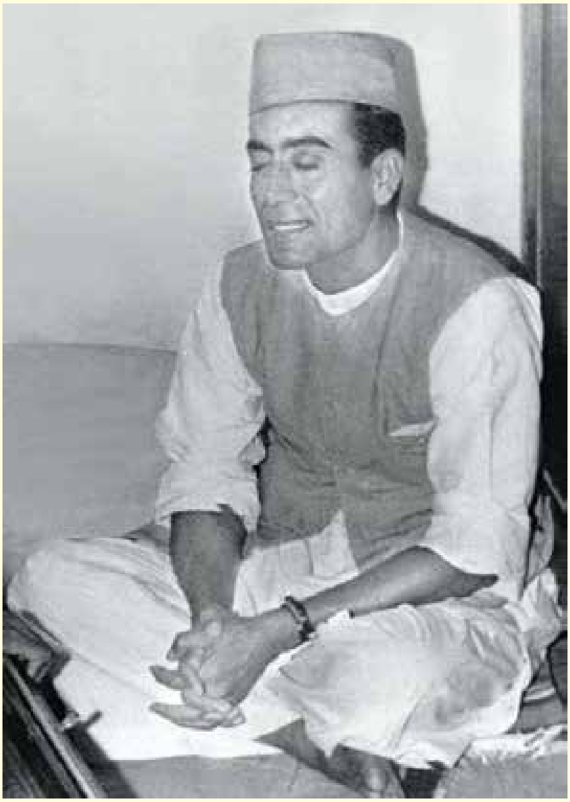

प्रार्थना तीनों लोकों को हिला कर रख देती है यह बार बार प्रमाणित हो चुका है।

परम दयालु, संकट मोचक हैं, श्री राम के प्रतिबिम्ब परम पूजनीय प्रेम जी महाराज। आइए कुछ पल बैठिए, उनके सान्निध्य में और दूसरों को साथ लेकर जीने का एक और प्रयास करें और राम को हर एक में पाएँ। राम राम अनन्त राम। ■

दीपावली के पुण्य-पर्व पर
सपरिवार लख लख बधाईयां, शुभ
एवं मंगल कामनाएं।

विजयदशमी

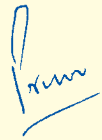

बुद्धि सुवृद्धि वीरता, दे रामायण गान ।
विपदा व्याधि विघ्न सभी, हरे कष्ट अज्ञान ।।
पुण्य पाठ रामायणी, पूर्ण पावन रूप ।
पूरे प्रेम से जो पढ़े, सो हो पुण्य सुरूप ।।

कुछ वर्ष पूर्व यह प्रायः सब का स्वभाव हुआ करता था कि सभी नवरात्रों में रामायण का पाठ किया करते थे, विशेषतया विजय दशमी के शुभ पर्व और दीवाली के शुभ अवसर पर। फिर परम पूज्य महाराज ने हम पर दया की कि रामायणी सत्संग आरम्भ कर दिया, जिनको सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनको अवर्णनीय आनन्द लाभ हुआ। उसके पश्चात् महाराज ने बाल्मीकीय रामायणसार का संशोधित तीसरा संस्करण सम्वत् 2015 में निकलवाया जो इस समय तक सब के कर कमलों में पहुँच चुका है, इसके विषय में महाराज के मुखारविन्द के शब्दों के कतिपय भाव इस प्रकार हैं,

महाराज ने यह रीति चलाई कि रामायण के नवाह रखे जाएँ। नवरात्रे थोड़े हों अथवा अधिक इस विषय में पाठकों को चिन्ता करना उचित नहीं । पाठ का भोग नौवें दिन विजय दशमी के शुभ पर्व को हुआ करे।

“एक युग आएगा जिसमें इस ग्रन्थ को अपना ही उच्च स्थान सुप्राप्त होगा। मुझे नहीं मालूम था कि इसको इतने सुचारू रूप से गाया भी जा सकता है और इसमें इतना रस भरा हुआ है।”

महाराज ने यह रीति चलाई कि रामायण के नवाह रखे जाएँ। नवरात्रे थोड़े हों अथवा अधिक इस विषय में पाठकों को चिन्ता करना उचित नहीं । पाठ का भोग नौवें दिन विजय दशमी के शुभ पर्व को हुआ करे। सम्मिलित रूप में गाकर रामायण का पाठ होना चाहिए – भले ही तीन दिन में समाप्त हो अथवा पाँच दिन में जितना जिसके पास अवकाश हो उतना ही समय देकर मननपूर्वक पाठ करें।

मन्दिर मान रामायण, मन मोहक सह आभ ।
दर्शन कर श्रीराम के, अलभ्य लो मिल लाभ ।।

वर्षा ऋतु से पहले समुद्र में हवा चलती है, समुद्र हिलता है, हलचल के भाव से समुद्र नवतर हो जाता है और वह वायु हिमालय तक जाती है और फिर देश में वर्षा करती है । इसी प्रकार भारत समुद्र में इन दिनों दशहरे का भाव होने के कारण सबमें हलचल हो जाती है। जिसने यह दशहरा बनाया – बड़ा परोपकार किया। रामलीला मनाने से सब ग्रामीण, नागर उल्लास में आ जाते हैं। हिन्दुत्व चर्म चक्षुओं के आगे आ जाता है।

सिया राम की जीवनी, जीवन जड़ी निधान ।
हिन्दू संस्कृति जाति का, है जो जीवन प्राण ।।

दशहरे के दिनों में रामायण का अभिनय किया जाता है नगरों में कितनी ही नाटक मण्डलियाँ होती हैं। युरोप में भी क्राइस्ट के जीवन का अभिनय किया जाता है। परन्तु वह दस बीस वर्षो में एक ही बार होता है, उसमें जो भाग लेते हैं निरन्तर पन्द्रह–बीस वर्ष उसी प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं, वे क्राइस्ट का अभिनय पूरा करते हैं। उसे देखने के लिए अमेरिका आदि देशों से भी लोग जाते हैं और प्रभावित होते हैं।

भारतीय लोगों में छोकरे नचाने की रीति चली

आती है। ब्राह्मण का लड़का होना चाहिए और बड़ा सज्जन फिर वे अभिनय करें तो पूरा करें।

वृन्दावन में भी श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज का अभिनय होता है। उसमें भी छोकरे होते हैं और चंचल छोकरे।

भक्ति प्रकाश के कथा प्रकाश में महाराज जी ने एक कथा लिखी है –

वृन्दावन में बंग देश के भक्तों की एक बड़ी मण्डली आई। उस मण्डली के सभ्यों ने बड़े भक्ति भाव से मन्दिरों का पूजन अर्चन किया और सुर ताल से कीर्तन करना आरम्भ कर दिया। उनका गाना बजाना सभी भावपूर्ण था। वह लोग जब हरि गीत गाते हुए गद्गद हो जाते तो वहाँ प्रेमरस की बदलियाँ बरसने लग जातीं। उनके अनुराग को देख कर भक्त जन सहसा कह उठते कि मनुष्य में रामानुराग हो तो ऐसा हो । भगवान् की भक्ति हो तो ऐसी हो। वास्तव में यही आराधन का प्रकार है, जो लोग भक्ति से शून्य छोकरों से कीर्तन कराया करते हैं, वह तो भक्ति धर्म को काला कलंक ही लगाते हैं। उन बंगीय भद्र लोगों के राग रंग से वृन्दावनवासियों को बड़ा भारी लाभ हुआ । वे मन्दिरों के महन्तों की माया के मर्म को समझ गए, उनको छोकरों के नृत्य गान से घृणा हो गई।

जो अभिनय होता है, उसमें कोई चरित्र निर्माण तो होता नहीं, पर लोगों में भावना बड़ी हो जाती है। यह भी बड़ी बात है। अभिनय करने वाले ब्राह्मण हों और सुबोध हों और वे यही काम किया करें।

अमृतसर में झाकियाँ निकलती हैं जो शिवाजी बन कर घोड़े पर निकलते हैं वे बाँके वीर होते हैं। इसी प्रकार हनुमान जी का अभिनय करने वाले वीर सेवक बनकर निकलें तो उचित है।

हम अभिनय को बुरा नहीं समझते, वे रूप में करते हैं, हम शब्दों में :–

रची सुरचना रुचिकरी, मुनि ने कर उपकार ।
हो मम उसके चरण पर, नमस्कार बहुबार ।।

('सत्य साहित्य' अक्तूबर 1961 में प्रकाशित परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का लेख) ■

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से

राम नाम में विश्वास

जय बोलो जय बोलो, भगवान राम की जय बोलो !

जब किसी पर परमेश्वर की कृपा होती है तो उस मार्ग पर चलता है। परन्तु कई रुकावटें आने लगती हैं। संगति ऐसी मिलती है जो संशय पैदा करती है। कोई माला फेर रहा था – संन्यासी मिला, उसने कहा," यह क्या करते हो, माला की फाँसी तुम्हारे गले में पड़ी है।" उसने कहा,"मैं कोई पाप तो नहीं कर रहा।" ऐसी कई बातें होती हैं– अपना विश्वास अटल होना चाहिए। कोई कितना भी कहे कि फलाँ साधु है, तेरे घर में औलाद नहीं, वहाँ जाने से मिल जाएगी, तेरे पास धन नहीं, वहाँ जाने से मिल जाएगा। मन में विचार आता है कि यह जो इतना तजुर्बेकार है, ठीक ही कहता होगा मैं भी वहाँ जाकर जतन करूँ– कई लोग ज्योतिषियों के पास भी जाते हैं– वह बताते हैं कि पाठ करवाओ। यह विश्वास होना चाहिए– कि मेरे इस मार्ग से बढ़ कर कोई तरीका नहीं। वह स्वयं ही कृपा कर देंगे। यह विश्वास होना चाहिए कि वह पूर्ण कर देगा– उससे भटकने की जरुरत नहीं– अगर माँगें तो परमेश्वर से ही माँगें। गद्गद् होकर माँग लो– माँग में रोना है, वह पूरी किया ही करते हैं।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से 11-4-1968 परम पूजनीय महाराज जी द्वारा नोट किए गए प्रवचन) ■

परम पूजनीय महाराज जी के तिलक दिवस पर लख लख बधाई

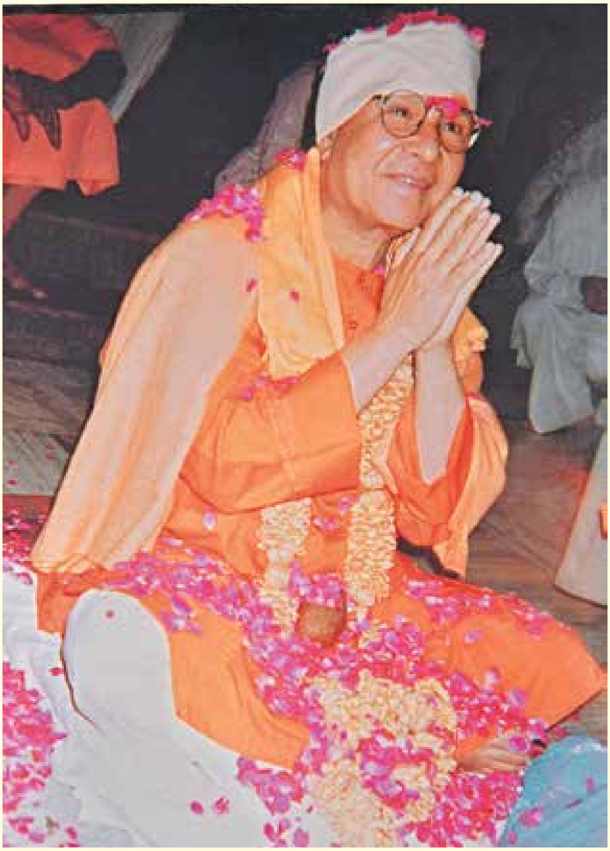

9 दिसम्बर 1993 का तिलक दिवस था, जब साधकों के अति प्रिय परम पूजनीय महाराज जी को गुरु महाराज जी के आसन में बिठाया गया और श्री रामशरणम् का एक और युग, एक और अनुभूत गुरु के द्वारा शुरु हुआ। परम गुरु राम और माँ के आदेश मिलने के बाद ही महाराज श्री ने इस स्थान को ग्रहण करने के लिए अपनी रज़ामंदी दी थी। इसके पहले एम्स (AIIMS) में 22 वर्ष सेवा की थी और परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के आदेशानुसार रिटायरमैंट लेकर 1988 में आप मनाली चले गए। मनाली में पाँच वर्ष प्रबल तपस्या की, देवी शक्ति के आशीष से बहुत सिद्धियाँ पाईं। अपने जीवन काल में उनका प्रयोग उन्होंने साधकों की मुक्ति और कष्ट निवारण के लिए किया लेकिन कभी उन सिद्धियों के अधिकारी हैं यह न बताया न जताया सिर्फ बोलते कि परम गुरुदेव राम और स्वामी जी महाराज की कृपा है।

एक बार पूछा, कभी–कभी बारिश की तरह ज्ञान बरसता है, वह क्या है? तब बताया कि मनाली में तपस्या के दौरान देवी शक्ति का ज्ञान लगातार दिन रात बरसता रहा, हाथ थक जाते थे लिखते लिखते, आँसू निकलते रहते थे और देवी अपने ज्ञान की वर्षा करती रहती। ऐसे रहे हमारे ईश्वर अनुभूत श्री महाराज जी, जो अपने आपको सदा सिर्फ़ एक साधक और सेवक बताते रहे।

परम पूजनीय महाराज जी का सफ़र 1993 से 2012 तक, अपने आप में सेवा का एक पूरा पुराण है। परम पूजनीय महाराज जी से महर्षि तक वर्णित होते रहे लेकिन वे अपने आपको राम जी, परम पूजनीय स्वामी जी और परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का 'नौकर' बताते रहे और सदा साधकों को याद दिलाते रहे कि सबके सद्‌गुरु स्वामी सत्यानन्द जी महाराज हैं। ऐसे दैविक सेवक रहे महर्षि स्वामी परम पूजनीय महाराज जी। गुरु को माथे पे रख कर, परम गुरु राम के श्री चरणों में बैठ कर, स्वामी जी महाराज की आध्यात्मिक अनुभूति और रचना को सामने रख कर हमेशा सबको दिशा दर्शाते रहे और आज भी दर्शा रहे हैं।

उनकी आँखों से परम पूजनीय स्वामी जी महाराज को देखना और परम पूजनीय प्रेम जी महाराज को समझना, समकालीन साधकों के लिए एक सौभाग्य रहा। परम गुरु राम का अवतरण करना और साधकों को उसकी अनुभूति दिलाना सिर्फ दीक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि राम नाम साधकों को हमेशा के लिए राम नाम वाहक बना देते।

उस दिव्य तिलक दिवस को प्रणाम, ईश्वर के हम सब साधक हमेशा ऋणी रहेंगे कि हमें तीनों लोकों के गुरु हमारे तीनों गुरुओं में मिले। आत्मिक प्रणाम, मेरे राम ! – चिर ऋणी रहेंगे हम। ■

राम नाम का प्रताप

विश्वामित्र

राम अर्थात् जिसमें सब रमते हैं, जो सब में रमता है, तथा जो कण–कण में व्याप्त है। भगवान् शिव जिसका सतत् स्मरण करते हुए, समाधिष्ठ रहते हैं वह राम। जो सूर्य को प्रकाश देता है, जो चन्द्रमा को ज्योत्सना प्रदान करता है, जो हम सबको जीवन देता है, जिसके बिना हम शव हैं वह राम। उसी राम के नाम की, हम उपासना करते हैं।

आप सोचोगे, अब हमने राम नाम ले लिया है, नाम जपना शुरु कर दिया है, अब हमारे ऊपर कोई रोग नहीं आएगा, घर में कोई दुर्घटना नहीं घटेगी। ऐसा आश्वासन मैं बिल्कुल नहीं देता। यह तो सब होता रहेगा। कल को आप कहो, हम नाम भी जपते हैं और हमें व्यापार में घाटा भी पड़ रहा है। यह तो प्रारब्ध के खेल हैं। परमात्मा का अकाट्य सिद्धान्त है, जो बोया है उसे काटना पड़ेगा। राम नाम, आपको बलवान बनाता है। हमारे ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है तब भी, हमारे मुख से, राम नाम न छूटे। यह, राम नाम का प्रताप है।

राम अर्थात् जिसमें सब रमते हैं, जो सब में रमता है, तथा जो कण–कण में व्याप्त है। भगवान् शिव जिसका सतत् स्मरण करते हुए, समाधिष्ठ रहते हैं वह राम। जो सूर्य को प्रकाश देता है, जो चन्द्रमा को ज्योत्सना प्रदान करता है, जो हम सबको जीवन देता है, जिसके बिना हम शव हैं वह राम। उसी राम के नाम की, हम उपासना करते हैं।

एक वृद्धा, गाँव में रहती थी। छोटी आयु में, विधवा हो गई, दो पुत्र थे और रोटी रोज़ी का कोई साधन नहीं था। स्वयं मेहनत करके बच्चों को पढ़ाया लिखाया। वृद्धा कहती है कि यह मेरे कर्मों को खेल है। एक घर जमाई बन गया है, एक कहीं दूर जा कर नौकरी करने लग गया है। यह राम नाम का प्रताप है कि वृद्धा दुःखी नहीं है, बिल्कुल, प्रसन्न है। अभी भी अपने हाथ से काम करती है। बड़ी उदार हृदय है। गाँव के लोग, उसे बड़ी अम्मा कहते हैं। छोटा बच्चा मिलता है, पाँव छूता है, भरपूर आशीर्वाद देती है। नहीं देखती कि मेरे शत्रु का पोता है, सिर पर हाथ फेरती है। कोई रोगी होता गाँव में, और कोई जाए न जाए लेकिन वृद्धा उस घर में ज़रुर जाती। सिर पर हाथ फेरती है और कहती है,"रोग अर्थात् एक पाप कर्म कट रहा है। क्यों घबराते हो ? दवाई के साथ राम नाम की औषध भी लो।" एक छोटी सी माला उनके हाथ में पकड़ा देती। "जितनी देर बैठती हूँ, मैं राम–राम जपती हूँ तू भी राम राम जप।"

वृद्धा की सेवा, सिमरन देख कर, भगवान् श्री प्रसन्न हुए। प्रभु ने स्वपन में दर्शन दिए, जीवन सफल हो गया। जिसे पाने के लिए हमने जन्म लिया है उसे वृद्धा ने पा लिया। भगवान् ने कहा, "देवी ! कोई वरदान माँगो।" वृद्धा हाथ जोड़ कर कहती है, "महाराज! मुझे यह दीजिएगा कि अन्तिम श्वास तक, मैं इस गाँव की सेवा करती रहूँ।" वृद्धा सुबह उठने वाली है। क्या देखती है आज, तकिए के पास, एक बहुत बड़ा आम पड़ा हुआ है। समझ गई, प्रभु प्रसाद देकर गए हैं। भगवान् को भोग लगाया, स्वयं भी खाया, इधर उधर बाँटा भी। गुठली बची, उसे अपने आँगन में लगा दिया। बहुत जल्दी विशाल पेड़ बन गया। बहुत आम लगने लगे। आते जाते को आम देती है, "लो बेटा! परमात्मा का प्रसाद है खाओ और राम–राम जपो।"

वृद्धा बड़ी प्रसिद्ध हो गई। राजा साहब के पास खबर पहुँची। आम बाँटती है, आम खा के उसका स्वाद कोई ज़िन्दगी भर भूलता नहीं। राजा सुन कर बड़ा ईर्ष्यालु हुआ। दो सिपाहियों को भेजा, जाओ उसका आम का पेड़ कटवा दो। वृद्धा ने उन्हें एक–एक आम दिया,"लो बेटा! आम चूस लो।" आम खाया, मानो राम नाम की मस्ती चढ़

गई। पेड़ काटना भूल गए। जाकर सेनापति को कहा कि एक बार आप भी आम खा कर देखो। सेनापति को भी वृद्धा ने आम दिया, वह भी पेड़ काटना भूल गया। बात राजा के पास पहुँची। आज राजा स्वयं आ गए। राजा हो, भिखारी हो, गरीब हो, अमीर हो, वृद्धा के लिए सब बराबर हैं, ''आओ बेटा! आम चूसो।'' राजा ने आम चूसा तो यही कहा, ''अम्मा! ऐसा आम मैंने ज़िन्दगी में कभी नहीं चूसा।'' वृद्धा ने दस बारह आम लाकर राजा को दे दिए, ''ले बेटा ! अपने घर ले जाना। गुठलियाँ अपने राज्य की सड़कों पर लगवा देना व उद्यान में लगवा देना।'' आया तो था, ईर्ष्यालु, द्वेष करने वाला, अभिमानी राजा, सज़ा देने के लिए, पेड़ काटने के लिए लेकिन गया है, वहाँ से, हाथ जोड़ता हुआ, माँ के चरणों को छूता हुआ, बिल्कुल विनम्र हो कर, माँ के आशीर्वाद लेकर। यह राम नाम का प्रताप है।

राम ही हमारा मन्त्र है। स्वामी जी महाराज ने इस मंत्र को छुपाया नहीं। सबसे डट के कहिएगा, ''हम राम राम जपते हैं''। एक मंत्र जिसे गरीब भी जप सकता है, अनपढ़ भी जप सकता है, विद्वान भी जप सकता है, शराबी भी जप सकता है, माँस खाने वाला भी जप सकता है, पापी भी जप सकता है और एक पुण्यात्मा भी जप सकता है। महिला भी जप सकती है, पुरुष भी। बालक भी जप सकता है और वृद्ध भी। नीची–ऊँची जाति वाले सब जप सकते हैं। देशी भी जपे और विदेशी भी। व्यापारी भी जप सकता है, मज़दूर भी, किसान भी एवं कर्मचारी भी। घर का नौकर भी और मालिक भी। हर समय जपा जा सकता है राम नाम। हर जगह भी जपा जा सकता है, काम काज करते भी जपा जा सकता है यह नाम।

राम नाम कैसे जपा जाता है ? राम नाम पर ध्यान किस प्रकार से लगाया जाता है? इस विधि को ही 'दीक्षा' कहा जाता है। मन में प्रश्न उठ सकते हैं– पता नहीं, दीक्षा के वक्त, हमें क्या देना होगा ? क्या माँगेंगे हमसे? क्या छुड़वाएँगे हमसे ? यह सब बातें स्वामी जी महाराज की पद्धति में नहीं हैं। स्वामी जी महाराज से, किसी ने प्रश्न कर दिया, ''गुरु जब मंत्र देता है तो शिष्य गुरु–दक्षिणा देता है। जब तक यह न किया जाए तब तक गुरु शिष्य परम्परा पूरी नहीं होती और आप ने कभी किसी से दो पुष्प भी स्वीकार नहीं किए।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''भाई ! मैंने भी, गुरु दक्षिणा ली है। याद करो, जिस वक्त राम मंत्र आपको दिया गया था, आपसे पूछा गया था, भाई ! आप राम राम जपते रहोगे, छोड़ोगे तो नहीं ? आप ने, हाँ कही थी। आपने वायदा किया है, आप राम राम जपते रहोगे यही हमारी गुरु–दक्षिणा है।'' अच्छा लगे, उचित लगे तो राम राम जपिएगा। राम राम जपते रहिएगा। स्वामी जी महाराज की साधना ही यही है — **मुख से जपिए राम और हाथ से करिए काम।** ■

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''भाई ! मैंने भी, गुरु दक्षिणा ली है। याद करो, जिस वक्त राम मंत्र आपको दिया गया था, आपसे पूछा गया था, भाई ! आप राम राम जपते रहोगे, छोड़ोगे तो नहीं ? आप ने, हाँ कही थी। आपने वायदा किया है, आप राम राम जपते रहोगे यही हमारी गुरु–दक्षिणा है।''

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण

हरिद्वार एक साधना सत्संग में किसी महिला ने आलोचना की कि दाल–सब्जी में नमक कम है। स्वामी जी तक सूचना पहुँची–महिला को बुलवाया। महिला ने भूल के लिए क्षमा माँगी। स्वामी जी ने कहा,''क्षमा तब, जब आज सारा दिन सारे कार्यक्रम के अतिरिक्त 20–25 हज़ार जाप अधिक, आज मौन सारा दिन और आगे से कभी ऐसी भूल न हो।'' स्वामी जी महाराज ने अगली बैठक में सबको समझाया,''प्रसाद की आलोचना नहीं, बिना नुक्स निकाले, तिरस्कार किए, आदरपूर्वक ग्रहण करें।''

(परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी से) ■

श्री स्वामी जी महाराज द्वारा श्री प्रेम जी महाराज को लिखा पत्र

श्रीराम

देहरादून

५-९-५५

श्री सेठी जी प्रेम पूर्वक आशीष: सन्तु।

आपका पत्र मुझे मिल गया था।

आप स्वस्थ हर्षित हैं सत्कार्य कर रहे हैं, ऐसा निश्चय है।

आप के मिलाप की मधुरता बहुत दिन तक मिलती रही। आपके कोमल कर्म अत्यधिक मनोरम हैं।

अभी आप गये हो। फिर शीघ्र आना ठीक नहीं है। अतः न आइएगा। मैं भी मसूरी जा रहा हूं।

श्रीराम कृपा आप पर सदा बनी रहे।

आपका मंगलकांक्षी

सत्यानन्द।

आध्यात्मिक विषय पर परम पूजनीय महाराज जी के उत्तर

(परम पूजनीय महाराज जी के साथ साधकों से पत्राचार के अंश)

प्र. महाराज जी, कृपया मुझे शक्ति दीजिए कि मैं परमात्मा का सिमरन कर सकूँ और अपनी ज़िन्दगी उनके चरणों में समर्पित कर सकूँ।

पूजनीय महाराज जी : अपना समय एवं जीवन परमात्मा को अवश्य समर्पित करें। यह उसका ही है। प्रभु कृपा करें कि आप अपनी साधना एवं काम पवित्रता से करें। शुभकामनाएँ। सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी, कृपया मुझे आशीर्वाद दें कि मैं सांसारिक ज़िम्मेदारियों के बावजूद श्रीरामशरणम् की साधिका बनी रहूँ।

पूजनीय महाराज जी : बधाई एवं शुभकामनाएँ। कृपया अपने इस तगमे को कभी न भूलें कि आप एक साधिका हैं, जो उसके पावन चरणों से बँधी हुई हैं। सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी, दीक्षा मंत्र क्या है ?

पूजनीय महाराज जी : हमारा मंत्र ''राम'' है। यह प्रभु का सबसे प्यारा एवं प्रचलित नाम भी है। इस पावन मंत्र के जाप से हम प्रभु के नाम के साथ–साथ गुरु मंत्र का भी जाप करते हुए दोनों से ही लाभान्वित होते हैं। सप्रेम जय जय राम। परमात्मा से प्रेम करते रहें।

प्र. महाराज जी, मैं आधे घंटे से अधिक स्वयं को जाप में एकाग्रचित्त नहीं कर पाता। कृपया सुझाव दें।

पूजनीय महाराज जी : एकाग्रचित्त होना ध्यान के लिए है। जाप, प्रेम से कीजिए। आप क्यों नहीं हरिद्वार साधना सत्संग में भाग लेते हैं? सप्रेम नमस्कार।

प्र. महाराज जी, हमें राम नाम के सिमरन की कृपा कैसे मिलेगी? कृपया हमें उसके सिमरन का आशीर्वाद दीजिए।

पूजनीय महाराज जी : दोनों ही साधना सत्संग अद्वितीय थे। प्रवचन का विषय मोह था अर्थात् ''मैं'' और ''मेरा''। इसे ''तुम'' और ''तुम्हारा'' में परिवर्तित करना होगा सिर्फ़ तभी मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। राम नाम इसे सम्भव बनाता है। सभी को सप्रेम नमस्कार एवं जय जय राम।

प्र. महाराज जी, मैं उस अलौकिक से संबंध कैसे जोड़ूँ?

पूजनीय महाराज जी : एक गुरु सिर्फ़ पथ–प्रदर्शन कर सकता है चलना आपको ही पड़ेगा। परमात्मा एक मात्र सहारा है। पूरे दिल से प्रार्थना कीजिए, वह अवश्य सभी कामों में और हर स्थान पर आपकी सहायता करेगा। प्रभु कृपा करें। जय जय राम और प्रेम।

प्र. महाराज जी, आपके दर्शन से मुझे अति आनन्द की प्राप्ति हुई। कृपया मार्गदर्शन करें।

पूजनीय महाराज जी : प्रभु की इच्छा को मानने से आप उसकी कृपा का पात्र बनेंगी और आप सभी पर कृपा बनी रहे। सप्रेम जय जय राम।

(महाराज जी के उत्तर शब्दशः अनुवादित हैं जबकि प्रश्नकर्ता की गोपनीयता बनाए रखने के लिए प्रश्नों को आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत संशोधित किया गया है।) ■

हमारा मंत्र ''राम'' है। यह प्रभु का सबसे प्यारा एवं प्रचलित नाम भी है। इस पावन मंत्र के जाप से हम प्रभु के नाम के साथ-साथ गुरु मंत्र का भी जाप करते हुए दोनों से ही लाभान्वित होते हैं। सप्रेम जय जय राम .... उससे प्रेम करते रहें।

युग पुरुष सदा स्मरणीय परम गुरु परम पूजनीय स्वामी जी महाराज को उनके मंगलमय निर्वाण दिवस 13 नवम्बर पर शत् शत् नमन। सम्पूर्ण विश्व को उनका शुभ आशीर्वाद प्राप्त हो।

'विश्वास'

मैंने परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज से नाम दीक्षा 1982 में ली। यह बात 1984 की है जब मेरी बेटी दो वर्ष की थी उसकी तबीयत बहुत खराब हो गई। हमारे एक मित्र मिलने के लिए आए उन्होंने अपने गुरु से बच्ची के लिए विशेष मंत्र लाने की पेशकश की और कहा ''बच्चे के हित में तुम्हें करना चाहिए।'' इस पर मेरे पति ने कहा,''एक मन्त्र जपते रहो राम राम राम।'' तो उस मित्र ने कहा,''जैसे अलग–अलग बीमारी की अलग दवा होती है ऐसे ही मन्त्र भी होते हैं।'' मैंने उस मित्र को, (जो अगले दिन अपने गुरुदेव के पास जाने वाले थे) कहा कि वे मन्त्र जरुर पूछ आएँ और मैं उसका जाप करुँगी। उस मित्र के जाने के बाद मेरे पति ने फिर कहा कि एक मन्त्र जपते रहो राम राम राम। मुझे बहुत शर्मिंदगी हुई, मैंने परमात्मा से प्रार्थना की कि हमारे मित्र वे मन्त्र न लाएँ क्योंकि मैं उनका अनादर भी नहीं करना चाहती और मैंने तय कर लिया कि राम राम राम ही जपूँगी।

उसी रात स्वप्न में परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज आए, मैंने उनकी गोद में सिर रखा हुआ था और वे बड़े प्रेमपूर्वक मेरे सिर पर हाथ फेर रहे थे और मुझे कह रहे थे,''विश्वास होना चाहिए, विश्वास होना चाहिए, विश्वास होना ही चाहिए–बच्चों में मोह को त्यागो।'' परम पूजनीय श्री महाराज जी का स्वर मुझे प्रातः जागने तक स्पष्ट सुनाई देता रहा। दो दिन बाद हमारे मित्र ने बताया की, कि वे अपने गुरुदेव से वह मन्त्र नहीं ला सके। मेरे परम पूजनीय गुरुदेव ने मेरी रक्षा की और तब से कभी किसी और का स्वप्न में भी भान नहीं होता। ■

'दयालु कृपालु गुरुदेव'

परम आदरणीय परम पूजनीय महाराज जी साधना, ज्ञान तथा नाम जाप पर बल दिया करते। हम सभी साधकों को अधिक से अधिक राम नाम का जाप करने की प्रेरणा देते रहते। एक बार अपने घर पर मैं नाम जाप करते–करते लीन हो गई और गुरु कृपा से मुझे परम पूजनीय महाराज जी के दर्शन हुए। मैं गद्‌गद्‌ हो उठी। धीरे–धीरे परम पूजनीय महाराज जी श्री हनुमान जी में परिवर्तित हो गए। मैंने प्रणाम किया अपने आप को धन्य माना। अगले दिन परम पूजनीय महाराज जी से मिलने पर उन्हें सकुचाते हुए बताया, ''महाराज जी, आप श्री हनुमान जी में बदल गए ऐसा मैंने ध्यान में देखा।'' परम पूजनीय महाराज जी पहले तो चुपचाप सुनते रहे फिर बहुत ही धीरे से सहजता से सरल भाव से बोले,'' हाँ, हनुमान जी मेरे बड़े भाई हैं।'' उस समय उनके मुखमण्डल पर तेज झलक रहा था और चेहरा प्रसन्नता से दमक रहा था। ऐसे हैं हमारे प्यारे व न्यारे परम पूजनीय महाराज जी, जो स्वयं ही अपने शिष्य पर कृपा भी करते हैं और उसे प्रदर्शित भी नहीं करते। इस प्रकार हनुमान जी के दर्शन गुरु कृपा के बिना सम्भव नहीं। ऐसे परम दयालु कृपालु गुरुदेव को हमारी चरण वन्दना। अतिशय प्रेम भाव से बारम्बार प्रणाम। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जुलाई से सितम्बर 2014

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

हरिद्वार में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय महाराज जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग हुआ।

हरिद्वार में 7 से 12 जुलाई तक व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) के उपलक्ष्य में साधना सत्संग हुआ। जिसमें 27 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

होशियारपुर, पंजाब, में 12 जुलाई को विशेष अमृतवाणी सत्संग हुआ जिसमें 91 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

दिल्ली, श्री रामशरणम् में 27 से 29 जुलाई तक परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में खुला सत्संग हुआ।

मनाली, हिमाचल प्रदेश, में 15 एवं 16 अगस्त को खुला सत्संग हुआ जिसमें 79 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सूरत, गुजरात, में 23 एवं 24 अगस्त को खुला सत्संग हुआ, जिसमें लगभग 2000 व्यक्ति खुली सभा में सम्मिलित हुए और 148 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रतनगढ़, राजस्थान, में 6 एवं 7 सितम्बर को खुला सत्संग हुआ जिसमें 125 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

शिमला, हिमाचल प्रदेश, में 7 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग के पश्चात् 32 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रिवाड़ी, हरियाणा, में 13 एवं 14 सितम्बर को खुला सत्संग हुआ जिसमें 83 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हीरानगर, जम्मू व कश्मीर, में 15 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग के पश्चात् 39 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

गुरदासपुर, पंजाब, में 19 से 21 सितम्बर तक खुला सत्संग हुआ, उसमें 151 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। लगभग 6000 व्यक्ति खुली सभा में सम्मिलित हुए।

दिल्ली, श्रीरामशरणम्, में जुलाई से सितम्बर तक 270 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हरिद्वार में 24 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक रामायणी साधना सत्संग होने वाला है।

नोट : 20 और 21 दिसम्बर को रोहतक में होने वाला खुला सत्संग स्थगित कर दिया गया है। दिल्ली श्रीरामशरणम् में 29 एवं 30 दिसम्बर को होने वाला खुला सत्संग नहीं होगा।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् भवनों की प्रगति

पीलीबंगा (हनुमानगढ़) राजस्थान, में श्रीरामशरणम् का निर्माण शीघ्र पूर्ण हो रहा है और 7 दिसम्बर 2014 को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन होगा।

नरोटमेहरा (पठानकोट) पंजाब, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य नवम्बर/ दिसम्बर में पूर्ण हो जाएगा।

पठानकोट, पंजाब, में 300 साधकों के ठहरने के लिए हॉल एवं कमरों का निर्माण कार्य, 1 नवम्बर से लगने वाले खुले सत्संग से पूर्व पूरा हो जाएगा।

तिब्बड़, गुरदासपुर, पंजाब, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है। ■

नामरुप, आसाम, में 31 अगस्त को श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ, जिसमें लगभग 4000 व्यक्ति सम्मिलित हुए और 463 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

नामरुप

कहते हैं कि जब एक बहुत बड़ी लहर आती तो छोटे–छोटे नाले और गड्ढे अपने आप ही लबालब भर जाते हैं। इसी प्रकार जब एक अवतार जन्म लेता है तो समस्त संसार में आध्यात्मिकता की बाढ़ आ जाती है और लोग वायु के कण–कण में धर्मभाव अनुभव करते हैं। ऐसा ही दृश्य 31 अगस्त को आसाम के छोटे से प्रान्त नामरुप में दृष्टिगोचर हुआ। श्रीरामशरणम् के उद्घाटन के समय ऐसा प्रतीत हुआ मानो, गुरुजनों की शरीर रुप में लाई हुई आध्यात्मिकता की वह आँधी, अब सूक्ष्म रुप में उनकी उपस्थिति से सुनामी बन कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैल रही है।

परम पूजनीय गुरुदेव की अनुकम्पा से दो दीक्षित साधकों की गाड़ी पर लगे राम शब्द से संयोगवश मिलन ही नामरुप में गुरुजनों का आगाज़ था। उस के बाद घर–घर में श्री अमृतवाणी का पाठ और स्थानीय लोगों की नाम दान लेने की उत्कट इच्छा से, परम पूजनीय गुरुदेव अप्रेल 2012, में वहाँ पधारे और 2226 लोगों को नाम दीक्षा प्रदान की। राम नाम का वह बीज श्रीरामशरणम् के उद्घाटन के रुप में परिणित हुआ। वहाँ के लोग दुष्प्रवृत्तियों को छोड़ कर श्री रामशरणम् के माध्यम से राम नाम एवं श्री अमृतवाणी की दिव्य तरंगों से स्वयं को और सारे समाज को अनुग्रहित कर रहे हैं।

अल्प समय में निर्माण एवं उद्घाटन स्थानीय साधकों द्वारा एक क्षण भर भी गुरुजनों की भौतिक कमी का आभास न होना इंगित करता है कि गुरु असीम है, गुरु तत्व है। ऐसी स्थिति में उनकी निरन्तर जलती भक्ति की लौ गुरु की असीमता एवं गुरु तत्व पर उनका विश्वास दर्शित करता है।

आइए हम सभी प्रार्थना करें हे मातेश्वरी ! हमें गुरुजनों ने जो यह राह दिखाई है, इस सृष्टि को भी इसी सूक्ष्म रुप से उपस्थित होकर दीक्षा रुपी प्रसाद से अनुग्रहित कर भक्ति रस का प्याला पिलाएँ। हमें जितना सामर्थ्य तुमने दिया है उसे हम नाम प्रचार में झोंक दें और अपने आपको तेरे चरणों में अर्पित कर देवें। सदा तेरे कृतज्ञ रहें। तेरा तुझ को अर्पण । ■

नामरूप में श्रीराम शरणम् केंद्र खुला

उमड़ी भक्तों की भीड़, हुए कई धार्मिक कार्यक्रम

▲ निज संवाददाता

नामरूप, 31 अगस्त। परम पूजनीय स्वामी सत्यानंद जी महाराज पूज्यपाद प्रेमजी महाराज व परम श्रद्धेय विश्वामित्र जी महाराज की कृपा व आशीर्वाद एवं भक्तों की भारी भीड़ के बीच आज नवनिनिर्मित आध्यात्मिक केन्द्र *श्रीराम शरणम* का उद्घाटन किया गया। इसके साथ ही नामरूप की धरा धन्य हो गई। उद्घाटन समारोह के पूर्व 24 घंटे का अखंड जाप किया गया। इसके पश्चात हवन व पूर्णाहुति हुई। इसके बाद नाम पट्टिका का अनावरण किया गया। इसके पश्चात मंगल कलश व ज्योति अधिष्ठानजी को समर्पित की गई। श्री अमृतवाणी का पाठ, भजन कीर्तन व प्रवचन, नाम दीक्षा व अमृत भंडारे का आयोजन भी किया गया।

नामरूप में बना श्रीराम शरणम पूर्वोत्तर का पहला व देश का 98वां केंद्र है। इस आध्यात्मिक केन्द्र के स्थापित होने से लोगों को सदमार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलेगी। श्रीराम शरणम के संस्थापक स्वामी सत्यानंद जी महाराज ने *अमृतवाणी* नामक भजन की रचना की थी। ज्ञात हो कि श्रीराम शरणम जैसे आध्यात्मिक केन्द्र में न ही किसी प्रकार का चढ़ावा लिया जाता है और न ही धूपबत्ती जलाने की कोई व्यवस्था है। सिर्फ आध्यात्मिक केन्द्र में राम नाम के जाप व अमृतवाणी भजन की ही व्यवस्था की गई है।

उद्घाटन कार्यक्रम में झारखंड, दिल्ली, पंजाब, कोलकाता, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, नाहरकटिया, आदि क्षेत्रों से साधक पहुंचे थे। स्थानीय विधायक व राज्य की सांस्कृतिक मामालों की मंत्री प्रणति फूकन व डिब्रूगढ़ के सांसद रामेश्वर तेली ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। नामरूप श्रीराम शरणम समिति के सचिव राजेश शर्मा व प्रचार सचिव पारसनाथ कमलापुरी ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए लोगों का आभार व्यक्त किया है।

प्रश्नावली

प्र 1. परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज जी के चित्रों में उनके हाथ में कौन सा ग्रन्थ है?

प्र 2. परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज जी को भगवत् साक्षात्कार (भगवान् के दर्शन) कहाँ हुआ था ?

प्र 3. परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का जन्म दिवस कब होता है?

प्र 4. परम पूजनीय महाराज जी (विश्वामित्र जी महाराज) ने दिल्ली से बाहर किस स्थान पर रह कर साधना की थी?

प्र 5. परम पूजनीय महाराज (विश्वामित्र जी महाराज) का दिल्ली श्रीरामशरणम् में तिलक कब हुआ?

प्र 6. भगवान राम को सीता जी के स्वयंवर में कौन से ऋषि साथ लेकर गए थे?

प्र 7. हनुमान जी की माता का नाम क्या था?

प्र 8. भरत जी की पत्नी का क्या नाम था?

प्र 9. अहिल्या किस मुनि की पत्नी थी?

प्र 10. राम जी ने लंका पर चढ़ाई करने से पहले रावण को समझाने के लिए किसको भेजा?

प्र 11. कौन से मुनि ने बाल्मीकि ऋषि को रामायण रचने के लिए कहा?

प्र 12. श्रीमद्भगवत् गीता जी में कितने अध्याय हैं?

प्र 13. भगवान् श्री कृष्ण ने गीता जी का उपदेश किसको दिया था?

प्र 14. महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण जी के रथ की ध्वजा पर किसका चित्र है?

उत्तर श्री रामायणजी, डलहौज़ी, 2 अक्तूबर, मनाली, 9 दिसम्बर 1993, ऋषि विश्वामित्र, अंजना, मांडवी, गौतम मुनि, अंगद, नारदजी, 18, अर्जुन, हनुमान जी ■

परम पूजनीय श्री महाराज जी को दिवाली पर बच्चों द्वारा दिए गए कुछ कार्ड

साधना सत्संग (अक्तूबर से दिसम्बर 2014)			
1	24 सितम्बर से 3 अक्तूबर	बुधवार से शुक्रवार	हरिद्वार रामायणी
2	11 से 14 नवम्बर	मंगलवार से शुक्रवार	हरिद्वार
3	28 नवम्बर से 1 दिसम्बर	शुक्रवार से सोमवार	ग्वालियर

खुले सत्संग (अक्तूबर से दिसम्बर 2014)			
1	12 अक्तूबर	रविवार	अमृतसर
2	17 से 19 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार	जम्मू
3	26 से 27 अक्तूबर	रविवार व सोमवार	सुजानपुर
4	1 से 2 नवम्बर	शनिवार व रविवार	पठानकोट
5	22 से 23 नवम्बर	शनिवार व रविवार	फाज़लपुर, कपूरथला

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली में नाम दीक्षा की तिथियाँ (अक्तूबर से दिसम्बर 2014)			
1	12 अक्तूबर	रविवार	प्रातः 10.30 बजे
2	16 नवम्बर	रविवार	प्रातः 11.00 बजे
3	28 दिसम्बर	रविवार	प्रातः 11.00 बजे

अन्य केन्द्रों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ (अक्तूबर से दिसम्बर 2014)			
1	5 अक्तूबर	रविवार	श्रीरामशरणम् लुधियाना
2	8 अक्तूबर	बुद्धवार	अब्दुल्ला गंज, म.प्र.
3	12 अक्तूबर	रविवार	श्रीरामशरणम् अमृतसर
4	19 अक्तूबर	रविवार	श्रीरामशरणम् जम्मू
5	26 अक्तूबर	रविवार	श्रीरामशरणम् सुजानपुर
6	2 नवम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् पठानकोट
7	9 नवम्बर	रविवार	बैंगलूर
8	23 नवम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् फाज़लपुर,कपूरथला
9	28 नवम्बर	शुक्रवार	श्रीरामशरणम् ग्वालियर म.प्र.
10	29 नवम्बर	शनिवार	श्रीरामशरणम् ग्वालियर म.प्र.
11	30 नवम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् ग्वालियर म.प्र.
12	7 दिसम्बर	रविवार	श्रीरामशरणम् पीलीबंगां राजस्थान

पूर्णिमा की तिथियाँ (जुलाई से सितम्बर 2014)		
1	8 अक्तूबर	बुद्धवार
2	6 नवम्बर	गुरुवार
3	6 दिसम्बर	शनिवार

नोट : लुधियाना, श्री रामशरणम् में 5 अक्तूबर, रविवार को प्रातः 9 से 10.30 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के उपरान्त नाम दीक्षा होगी।

अब्दुल्ला गंज, म.प्र गल्ला मंडी प्रांगण में 8 अक्तूबर, बुद्धवार को अपराह्न 2 से 3.30 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के उपरान्त नाम दीक्षा होगी। यह स्थान भोपाल से होशंगाबाद की एन.एच 12 पर 35 कि.मी. दूर है।

बंगलौर, कर्नाटक एस.ए. जैन ट्रस्ट सदन, न. 19 वुड स्ट्रीट, नज़दीक ब्रिगेड टावर्स में 9 नवम्बर रविवार को प्रातः 11 से 12.15 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के उपरान्त नाम दीक्षा होगी।

दिल्ली, आर–814 न्यू रजिन्द्र नगर में 21 नवम्बर शुक्रवार को प्रातः 11 से 12.30 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन होगा।

पीलीबंगां, 7 दिसम्बर 2014 को पीलीबंगां, राजस्थान में श्रीरामशरणम् का उद्‌घाटन होगा।

दिल्ली –श्रीरामशरणम् में 31 दिसम्बर बुद्धवार को प्रातः श्री अमृतवाणी पाठ के बाद श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ आरम्भ होगा जिसकी पूर्ति 1 जनवरी 2015 को प्रातः 7 से 8 भजन कीर्तन व प्रवचन के साथ होगी।

'अमरता दिलाने का अचूक साधन है प्रवचन पीयूष'

संसार का प्रत्येक प्राणी मृत्यु से भयभीत रहता है तथा अमरता की ओर जाना चाहता है। अमरता का साधन है अमृत अर्थात पीयूष। पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने हमें वही महान साधन प्रवचन पीयूष के रुप में प्रदान किया है। धर्म से अध्यात्म किस प्रकार भिन्न है और अध्यात्मिक जीवन कैसे बनाया जा सकता है? इस का अत्यन्त सरल लेकिन प्रभावी शब्दों में विवेचन इस प्रवचन पीयूष में मिलता है। आत्मा को लक्ष्य रख कर जो बात की जाए, वह अध्यात्मवाद है। मानव को निरालस्य हो कर नाम जाप, भजन, ध्यान करते रहना चाहिए। आलस्य ही मृत्यु है और पुरुषार्थ ही जीवन है। उपर्युक्त अनेक तथ्य प्रवचन पीयूष में संग्रहित हैं। श्री रामशरणम् को उसके वास्तविक उद्देश्य को तथा मानव जीवन और साधना के महत्व को जानने का अचूक साधन प्रवचन पीयूष है। साधना के प्रत्येक पक्ष पर स्वामी जी के विचार इस में उपलब्ध हैं। साधक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर इस में निहित है। अतः न केवल प्रत्येक साधक को इसे स्वयं पढ़ना चाहिए बल्कि दूसरों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। साथ ही प्रत्येक प्रवचन का भली भान्ति चिन्तन मनन करते हुए अन्य साधकों के साथ उस पर विचार विमर्श भी करना चाहिए।

संतों की विशेषता यह है कि वे हलाहल (विष) स्वयं पान करके अमृत को समाज के अन्य लोगों में वितरित करते हैं। यही अमृत पूज्यपाद संत स्वामी श्री सत्यानन्द जी महाराज ने 'प्रवचन पीयूष' के रुप में हमारे लिए प्रदान किया है। अध्यात्म के रहस्यों को उजागर करते हुए उन्होंने राम–नाम की महत्ता, विधि, लाभ, जीवन का उद्देश्य और उसे प्राप्त करने के सरल साधन, सभी का वर्णन विभिन्न प्रवचनों में किया है। समस्त धर्म–ग्रन्थों का सार तो इसमें आ ही गया है और साथ ही साथ ऐसे नवीन तथ्य भी इसमें समाहित हैं जो संत की निजी अनुभूति होती है और वे किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं मिलते हैं।

— एक साधक के विचार

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न०: 6642